फरवरी 2016

वर्ष 28 सप्तम् अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 'अनुभव' एक महान् अध्यापक

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
18 आर्थिक परिदृश्य
23 राष्ट्रीय परिदृश्य
27 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
32 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 विज्ञान समाचार
38 युवा प्रतिभाएं
41 सारभूत तत्व कोष

लेख

45 सामयिक लेख—नमामि गंगे कार्यक्रम
47 बैंकिंग लेख—पेमेंट बैंक की स्थापना के कारण एवं लाभ
49 समसामयिक लेख—यूरोप में शरणार्थियों का सैलाब
51 कैरियर लेख—भारतीय रेल : नौकरी की सम्भावनाओं से भरपूर-2016

हल प्रश्न-पत्र

56 मध्य प्रदेश प्री.बी.एड. परीक्षा, 2015
62 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2015 प्रथम प्रश्न-पत्र (कक्षा I–V)
78 बिहार एस.एस.सी. स्नातक स्तरीय (प्रा.) परीक्षा, 2015
89 केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल सहायक कमाण्डेन्ट परीक्षा, 2015

यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कम्पनी लि. सहायक भर्ती परीक्षा, 2015

100 तर्कशक्ति परीक्षा
104 English Language
107 परिमाणात्मक अभियोग्यता
111 सामान्य जागरूकता
113 कम्प्यूटर ज्ञान
116 आगामी रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड (गैर-तकनीकी संवर्ग) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

सामान्य/विविध

124 भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उपक्रम क्षेत्र में अनुसंधान, विकास कार्यक्रम तथा नई दिशाएं : सिंहावलोकन
126 कम्प्यूटर : एक दृष्टि में
128 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

'अनुभव' एक महान् अध्यापक

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''औपचारिक शिक्षा आपको जीविकोपार्जन के लिए उपयुक्त बनाती है, स्व-शिक्षा (अनुभव) आपका भाग्य बनाती है.''

—जिम रोहन

हर पिता अपने बालक को उत्तम संस्कार देना चाहता है. अगर वह धनवान नहीं है, तब भी यही चाहेगा कि उसका पुत्र धनवान बने. अगर वह स्वयं शराबी है तब भी यही चाहेगा कि उसका पुत्र शराबी न बने. यहाँ उत्तम संस्कार देने की चाहत सभी अभिभावकों में होती है. अध्यापकगण भी अपने विद्यार्थियों को अपना उत्कृष्ट ज्ञान और अनुभव देते हैं, फिर भी सारे ही छात्र न तो उत्तम रीति से पढ़ते हैं, न ही अच्छे संस्कारवान बन पाते हैं. ऐसे में हम कारण ढूँढ़ते हैं. आखिर इन बालकों व विद्यार्थियों में ये विचित्रताएं कहाँ से आईं ? कारण है उनके अपने आन्तरिक संस्कार, आंतरिक जजबात. हम सभी अपने साथ अनेक जन्मों के संचित संस्कार लेकर आते हैं. हममें से कोई भी पूर्णरूपेण परिशुद्ध नहीं है.

हमें निरंतर विकसित होने की जरूरत होती है. सम्बर्द्धित व पोषित होने की जरूरत होती है. और हम सीखते भी जाते हैं. न केवल बाल्यकाल में प्राप्त स्कूली शिक्षा या महाविद्यालयों में हम सीखते हैं वरन् जीवन-पर्यन्त विविध परिस्थितियों से भी हम सीखते हैं. हम अपने चारों ओर के परिवेश से भी सीखते चले जाते हैं. सीखने की प्रक्रिया, भावना व स्तर भी हम सबका जुदा-जुदा है. जो हर दिन बहुत कुछ सीख लेता रहता है, वह एक दिन बहुत कुशल, प्रज्ञावान व समझदार बन जाता है.

यूँ तो हमारे सीखने के अनेक तरीके हैं. हम किसी को देखकर सीखते हैं, सुनकर सीखते हैं. किसी के साथ रहकर सीखते हैं. परन्तु सर्वाधिक सीख हमारे अपने अनुभवों से होती है. 'अनुभव' इस जगत् का आज तक का सबसे बड़ा, सबसे महान् अध्यापक रहा है.

हमारा अनुभव ही हमारा नज़रिया विकसित करता है. ''जिन्हें अनुभव से ज्ञान मिला हो वे कभी ठोकरे नहीं खाते व जिन्होंने कभी ठोकर न खाई हो वे कभी अनुभव नहीं पाते.'' यह कथन जीवन की सच्चाइयों को संकेतिक करता है. हम सभी जीवनपर्यन्त अपने अनुभवों से अक्ल पाते हैं. अनुभवों का सम्बन्ध उम्र से भी होता है.

इसी कारण वृद्ध लोग अपने बालों की सफ़ेदी का कारण बताते हुए कहते हैं कि ''ये बाल हमने धूप में नहीं पकाए हैं.'' अर्थात् उम्र यूँ ही नहीं गुज़ारी है. उम्र के प्रत्येक दौर के अनुभवों से इंसान सीख हासिल करता जाए, तो वह निश्चित तौर से पूर्ण ज्ञानी हो जाए. किन्तु अनेक लोगों की शारीरिक आयु तो बढ़ जाती है पर मानसिक आयु नहीं बढ़ती. वे अपने अनुभवों से सीख नहीं लेते. इसलिए बुजुर्ग होने पर भी बालकवत् रूठना, मनाना, नापसंदगी पर झल्लाना, पसंदीदा को पाने के लिए उतावला हो जाना चालू ही रहता है. विद्यार्थी जीवन को सर्वाधिक तौर से प्रभावित करता है—घर में वरिष्ठजनों का व्यवहार व स्कूल में शिक्षकों का. यदि ये दोनों वर्ग अनुभवज्ञानी हैं, तो वे जो भी बातें अपनी संतानो एवं विद्यार्थियों को कहेंगे, उन शिक्षाओं में प्राण होंगे, जीवन को देखने व समझने की गहरी आँख होगी. अन्यथा उनकी बातें थोथे उपदेश होंगी. वरिष्ठजनों को चाहिए कि वे अपने जीवन के अनुभवों से पाई सीख को अपनी संतान के साथ साझा करें. उन्होंने अगर 1 से 100 तक की गिनती गिनी है, उतना ही जाना है, तो बालकों को 101 से आगे जानने के लिए प्रेरित करें. अपना अनुभव ज्ञान उन्हे देकर उन भूलों को करने से बचाएं, जिनके कारण उन्होंने बहुत कुछ खोया है. प्रतिभाशाली संतान बुजुर्गों व शिक्षकों के अनुभव से कम समय में ही बहुत कुछ सीख हासिल कर पाती हैं.

●●●